International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 12-06-2023, Accepted: 28-06-2023, Published: 14-07-2023
Volume 9, Issue 4, 2023, Page No. 21-24

बदलते सम्बन्ध और प्रभा खेतान के उपन्यास

डॉ. स्वाति वर्मा
अतिथि प्राध्यापक (हिंदी), हिन्दू महावि।लय, दिल्ली विश्ववि।लय, दिल्ली, भारत

सारांश
हमारा समाज संबंधों को अपने अनुसार ही देखना चाहता है। मनुष्य से ही समाज बनता है एवं जहां दस तरह के मनुष्य होंगे, उनके विचारों में भी भिन्नता होगी इसलिए जो संबंध किन्हीं दो लोगों के लिए वैध है दूसरों की नजरों में अवैध। हम में से कोई भी इसका निश्चित समीकरण नहीं निकाल सकता क्योंकि हृदय से जुड़े संबंधों को दूसरों के सामने परिभाषित करना कई बार इतना कठिन हो जाता है कि उसकी अभिव्यक्ति मौन हो जाती है। कुछ ऐसी ही सच्ची कहानियों से रूबरू कराता है प्रभा जी का हर एक उपन्यास। रिश्तों की सही समझ, गहरी परख एवं संवेदना से परिपूर्ण एक–एक शब्द हमें सोचने–विचारने को बाध्य करते हैं। जब हम इन पात्रों के स्थान पर खड़े होते हैं, उनकी जिंदगी जीना शुरु करते हैं तब हम जान पाते हैं कि कैसे कोई सबकी नजरों में दोषी और स्वयं की निगाहों में निर्दोष और निश्छल होता है। उपभोक्तावादी समाज की यह सबसे बड़ी विडंबना है कि यहां सब कुछ बिकता है। सबका एक निश्चित मूल्य है। जो चीजें मूल्य हीन हैं या जिन्हें आप गणित में नहीं बांट सकते, वह है– मानवीय संबंध, प्रेम, करुणा, दया, अपनापन, लगाव इन्हें पाने की लड़ाई ही तो भूमंडलीकृत समाज की लड़ाई है, जिन्हें बाजार मुहैया नहीं कराता है।

मूल शब्दः स्त्री–परुष सम्बन्ध, भूमंडलीकरण, बाजारवाद, उपभोक्तावादी समाज, तलाकशुदा–स्त्री, बदलते संबंध, समलैंगिकता, व्यवसायीकीरण, अवसाद, तनाव, अलगाव, प्रभा खेतान, ईमानदारी, विश्वास, स्थायित्व।

प्रभा जी के उपन्यास मानव संबंधों की सूक्ष्म पड़ताल करते हैं इनके प्रायः सभी उपन्यास मानव संबंधों में आए परिवर्तन तथा उतार–चढ़ाव को परिभाषित करते हैं। इनके एकाध उपन्यास को यदि हम छोड़ दें तो करीब–करीब सभी उपन्यास संबंधों की विवेचना करते हुए पाए जाते हैं। 'आओ पेपे घर चलें', 'तालाबंदी', 'अग्निसंभवा', 'छिन्नमस्ता', 'अपने–अपने चेहरे', 'पीली आंधी' एवं स्त्री–पक्ष सभी में रिश्तों की बुनावट, बदलाव एवं गर्माहट दिखाई पड़ती है। 'आओ पेपे घर चलें' विदेश की पृष्ठभूमि पर लिखा गया उपन्यास है। प्रभा जी अपने व्यवसाय के दौरान अनेकों बार विदेशी दौरे पर जाती थीं, उनका चमड़े का व्यवसाय था। वह बैग, जूते, चप्पल, कोर्ट आदि बहुत कुछ विदेशों में निर्यात करती थीं, इस सिलसिले में वे कई बार विदेश गईं आईं। वहां वे कई लोगों से मिलीं उनके कई दोस्त भी बने, उन सब के साथ बिताए गए अनुभवों का दस्तावेज है 'आओ पेपे घर चलें। 'आओ पेपे घर चलें' की प्रमुख पात्र आइलिन एक विचित्र प्रकार की जिंदगी जीती है, वह एक विशेष रोग से ग्रसित है लेकिन किसी से कुछ कहती नहीं है। वह 70 वर्ष की उम्र में भी प्रेम करती है, रोजर आइलिन का पांचवा प्रेमी है और कुल मिलाकर उसके जीवन में दो पति और पांच प्रेमी हैं। आइलिन रोजर के फोन की प्रतीक्षा करती है, लेकिन उसका फोन नहीं आता है रोजर शादीशुदा है और उसकी पत्नी इस संबंध को अस्वीकार करती है। यह सब कुछ जानते हुए भी आइलिन रोजर से प्रेम करती है। वह हर पुरुष में अपने पति का चेहरा देखती है–

"मैं अपने पहले पति का चेहरा हर पुरुष में खोजती रहती हूं। किसी में उसकी आवाज पाती हूं, कहीं उसकी दृष्टि, कहीं उसका स्पर्श। कोई बिल्कुल उस जैसा लगता है।"[1]

वहीं मरील एक तलाकशुदा स्त्री है, जो अपने दो बच्चियों के साथ जीवन–यापन कर रही है। वह डॉक्टर डी. की पत्नी की वार्डरोब मैनेजर है। उसकी दोनों बच्चियों में असंतोष है। वे अपने माता–पिता के बुरे संबंध से स्वयं को टूटा हुआ पाती हैं। लारा कहती है–

"पढ़ने का मकसद ही क्या? क्या होगा रुपए कमाकर, यदि जिंदगी में प्रेम ना हो? वह लगाव चाहती थी और उसे जिंदगी में लगाव नहीं मिल रहा था। मां–बाप साथ क्यों नहीं रहते?"

प्रभा सोचती है– "सिलसिला ख्यालों का, घटनाओं का, एक बार शुरू होता, तो रुकने का नाम ही नहीं लेता। यह पराई जमीन है, लेकिन आदमी सब जगह तो एक से हैं। वही सुख–दुख के लम्हें, वही बातें।"[2]

लारा संबंधों के बिखराव से व्यथित है। माता–पिता, पति–पत्नी, भाई–बहन किसी को किसी से प्रेम नहीं है। वह ऐसे समाज से दुखी है जहां किसी को किसी से प्रेम नहीं है। संबंधों की बुनियाद इतनी कमजोर है कि किसी के प्रति किसी के मन में कोई स्नेह भावना नहीं है। इन सब चीजों से लारा का मन विरक्त रहता है। संबंधों के टूटन की त्रासदी इन उपन्यासों में भली–भांति दिखाई देती है। पात्र भले ही अलग–अलग हैं, लेकिन उनकी पीड़ा और उनका दुख सब एक सा है। हेल्गा का परिवार एक ऐसा परिवार है जो हेल्गा से प्रेम चाहता है परंतु हेल्गा अपने अतीत को भूलकर जीवन में आगे नहीं बढ़ना चाहती। हेल्गा और उसके पति के बीच टकराव इस बात को लेकर होती है कि वह इजराइल के किम्बूत में पैसे देना चाहती है तथा वहां जाना चाहती है, अपनी बेटी बिटिना को भी वह वहां देना चाहती थी लेकिन उसके प्रति हमेशा अतीत को भूलने को कहते थे। प्रभाजी लिखती हैं–

"एक घर को धीरे–धीरे टूटते हुए देख रही हूँ। हर घंटा अपने पिछले घंटे से अधिक निष्ठुर, क्रूर, आहत करने वाला। कहां हम लोग पिकनिक पर जा रहे थे, और कहां यह गृहदाह! जैसे सुबह किसी ने मकान की छत उखाड़ ली, फिर खिड़की–दरवाजों के पल्लों को खोलकर रख दिया, अब मानो कोई धीरे–धीरे निःशब्द दीवारों को गिराता जा रहा है।.... और कहीं कोई है, जो इस घर की नीव में बैठा कातर स्वर में प्रभु से प्रार्थना कर रहा है, "जीसस, मेरे घर को बचा लो! यूं मत तोड़ो जीसस! हेल्गा को सद्बुद्धि दो?"[3]

वहीं दूसरी ओर मिसेज क्लाराब्राउन की बहन कैथी बहुत ही जिंदादिल और महत्वकांक्षी स्त्री है। वह जीवन से सब कुछ पाना

चाहती है और अपनी एक अलग पहचान बनाना चाहती है। वह अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है। वह अपनी आंटी एडिना के विषय में बताती है कि वह एक व्यक्ति से प्रेम करती है मगर विवाह इसलिए नहीं कर सकती क्योंकि वह पहले से विवाहित है। परिवार वालों ने ऐसे संबंधों के लिए स्वीकृति नहीं दी इसलिए उनका दिया हुआ धन संपत्ति उन्होंने लौटा दिया।

"आंटी कहती हैं कि जो मां–बाप मेरी भावनाओं की कद्र नहीं कर सकते, जिनकी निगाहों में मेरे लिए सम्मान नहीं, उनसे ना मुझे संबंध रखना है और न ही उनके पास जाना है।"[4]

कैथी अपनी जिंदगी अपनी शर्तों पर अपने तरह से जीना चाहती है वह अपने पति और बच्चों में अपनी जिंदगी नहीं खपाना चाहती थी। पता नहीं यह कैसा संबंध है जहां वे दोनों पति–पत्नी तो थे लेकिन दोनों एक–दूसरे से अलग–अलग बस अपने लिए जीते हुए।

कैथी कहती है

"क्या बकवास कर रही हो? बच्चा मेरी जिंदगी को सार्थक बना देगा? वह तो केवल मेरी जिंदगी के और बीस बरस खा जाएगा और उसके बाद कोई नहीं रहेगा। वह घर छोड़कर पता नहीं कहां किस जगह....।"[5]

समाज में बदलते संबंधों के अर्थ और प्रयोजन

वर्तमान समय में रिश्ते कैसे गडमड होते जा रहे हैं। किसी भी रिश्ते में कोई सुरक्षा नहीं, यह भय सदा बना रहता है कि जाने कब सामने वाला आपको छोड़कर चला जाए। विवाह पूर्व ऐसी स्थिति तो स्वाभाविक है लेकिन विवाह उपरांत। प्रेमी का छोड़कर जाना समझ में आता है क्योंकि वहां कोई सामाजिक बंधन नहीं होता लेकिन सामाजिक रिवायतों के साथ किए गए विवाह भी आखिर क्यों नहीं टिक पाते। यह कौन सा समाज है और कैसा परिवार? जहां यह भय सालता रहता है कि एक न एक दिन आपको सब छोड़कर चले जाएंगे.

'छिन्नमस्ता' उपन्यास में तो संबंधों के विकृत होते जाने को भी दिखाया गया है। किस प्रकार 10 वर्ष की उम्र में प्रिया का उसके सगे बड़े भाई के द्वारा यौन शोषण होता है और वह आम बच्चों की तरह चुप रह जाती है क्योंकि उसे धमकाया जाता है कि चुप रहो वरना लोग तुम्हें ही गलत समझेंगे और वह बच्ची उस वहशी राक्षस से डरी सहमी किसी से कुछ नहीं कहती।

प्रिया का कथन है

"मुझे सुरक्षा की जरूरत थी ताकि कोई मुझे बड़े भैया से बचा लें। मैं वे रातें भूल नहीं पाती जब भाभी जी बेहद बीमार रहने लगी थीं और भैया मेरे और सरोज के कमरे में सोया करते थे। रात को चुपके से रेंगकर मेरी ओर उनका आ जाना। मेरा कलेजा धकधक करता रहता और मेरा रोम–रोम किसी रक्षक को पुकारता।"[6]

बड़ा भाई जो राखी के बंधन से बंधकर उसकी रक्षा की प्रतिज्ञा करता है वही उसके लिए असुरक्षा का कारण बन जाता है। प्रिया घर नहीं जाना चाहती, सूरज डूबते ही उसे दहशत घेर लेती थी। प्रिया ने विवाह के बाद भी सुरक्षा की चाह रखी, लेकिन नरेंद्र एक अच्छा पति साबित नहीं हुआ। उसे प्रिया के किए गए हर काम से चिढ़ थी–

"मैं इतना समझ रही थी कि नरेंद्र मुझसे खुली लड़ाई लड़ना चाहता है और जबकि मेरी जिंदगी से तो सब धीरे–धीरे दूर हो चुके थे। मेरी उद्दाम महत्वाकांक्षाओं को नरेंद्र बार–बार सेक्सुअल फ्रस्ट्रेशन का नाम देता। नरेंद्र की क्रूर चाल। क्या वह सोचता है कि मैं हक की लड़ाई लडूंगी? कौन से हक की? जब हम दोनों में प्यार का कोई लम्हा भी नहीं बचा?"[7]

नरेंद्र के विषय में प्रिया ने क्या सोचा था और वह कैसा पति निकला। हर 6 महीने में वह एक से एक हसीन सेक्रेटरी बदलता रहता था अपनी भूख मिटाने के लिए।

प्रिया की दोस्त जुडी उन दोनों के संबंधों को लेकर कहती हैं

"नहीं प्रिया, लेकिन तुम्हारा और नरेंद्र का संबंध बड़ा नेगेटिव रूप ले चुका था, जहां दोनों एक–दूसरे को मारने पर उतारू हो रहे थे..... नहीं, मैं तुम्हें बुरा नहीं कह रही, पर हट जाना ज्यादा अच्छा होता है। बनस्वत एक–दूसरे पर निर्मम प्रहार करते चले जाओ।"[8]

संबंधों की ऐसी निर्मम परिणति, जहाँ रिश्ते केवल नाम के लिए रह जाते हैं और व्यक्ति जीता कुछ और ही है। आए दिन रिश्तों से ईमानदारी, विश्वास और स्थायित्व खत्म होता जा रहा है। ये शाश्वत प्यार, स्थाई रिश्ते और गहरे संबंध जैसे तमाम शब्द केवल मिथक भर होते हैं और एक बार जब अपने इस मिथक को अनावृत किया, फिर क्या बचा रहता है जीवन में?

प्रभा खेतान के उपन्यासों में बदलते संबधों की सामाजिक भूमिका

प्रिया का एक वक्तव्य है जो स्त्री–पुरुष के संबंधों को उद्घाटित करता है।

"लेकिन स्त्री–पुरुष के इस संबंध की अपनी परंपरा है और इस परंपरा से विश्वास उठने का अर्थ यह कतई नहीं कि मेरा जिंदगी से विश्वास उठ गया। ज्यों–ज्यों मैं अपने काम में स्थापित होती गई, त्यों–त्यों प्यार की जरूरत, प्यार के माध्यम से स्वयं को किसी भी पुरुष की नजर में स्थापित करने की चेष्टा और चाहत भी खत्म होती गई।"[9]

परंतु जीवन क्या स्वयं को किसी न किसी की नजरों में स्थापित करने की चेष्टा है। काम से क्या प्रेम की भरपाई हो सकती है। यह कैसा जीवन है जो केवल एक सही व्यक्ति की तलाश भर बनकर रह जाए।

'पीली–आंधी' की सोमा प्रगतिशील विचारों वाली एक महत्वकांक्षी लड़की थी, वह कान्वेंट की विधार्थी रही थी। जीवन को एक दिशा में देखने वाली सोमा को यह नहीं पता था कि व्यक्तिगत जीवन में उसे संबंधों की ऐसी विकृति देखने को मिलेगी। गौतम का व्यवहार सोमा को हमेशा से ही अजीब–सा लगता था। सोमा से गौतम कहता है–

"सोमा तुम्हारे मन में यदि अपराध नहीं हो, ईर्ष्या नहीं हो, विरोध नहीं हो तब तुम्हारे में मेरी रुचि जागृत नहीं होती, तुम एक नियमित सेक्स चाहती हो, मासूम भरा–भरा मैं इसे घरेलू नुस्खा कहूंगा.... स्वादहीन.... फीका।"[10]

सोमा को कुछ समझ में नहीं आया था। गौतम की यह अजीबो–गरीब भाषा। सोमा गौतम के सच से अनजान थी और घरवाले भी, सोमा के माँ न बन पाने का जिम्मेदार सब लोग सोमा को ही मानते थे। जैसा कि आमतौर पर हमारे समाज में होता है लेकिन गौतम के आचरण से वह परिचित थी, उसकी रुचि सोमा में नहीं बल्कि पुजारी भैया और बिल्लू ड्राइवर में है। वहीँ सुजीत के साथ संबंध में आते ही वह गर्भवती हो जाती है। गौतम इस बात को अच्छी तरह से जानता है कि यह बच्चा उसका नहीं है इसलिए उसे बच्चा गिराने के लिए यातनाएँ देता है, सोमा इसके लिए तैयार नहीं है और वह मुखर होकर सबके सामने इस बात को स्वीकार करती है, लेकिन गौतम इस बात से भयभीत है कि उसका सच सबके सामने आ जाएगा। जहां ताई जी, लता बाई बाई लोग सब खुश थे, वहीं दूसरी ओर गौतम ओर सोमा के बीच एक रहस्य था जिसे कोई नहीं जानता था।

गौतम सोमा से कहता है

"क्या हम लोग साथ मिलकर इस समस्या का सामना नहीं कर सकते? समस्या? यह मेरी अपनी समस्या है। जैसे पुजारी भैया के साथ जीने की तुम्हारी मजबूरी है।

पति–पत्नी की बात में पुजारी भैया कहाँ से आ गए?

यानी तुमको अपना आचरण गलत नहीं लगता?

तुमने उस दिन पुजारी भैया पर झुके देख लिया तभी ना !

देख लिया माने?

नहीं देखती तो तुम नहीं समझ सकती थी, कभी नहीं। मेरे और पुजारी भैया के बीच सब कुछ चलता रहता वैसे ही जैसा कि आज तक अब तक चलता आया है।[11]

समाज में व्याप्त 'गे' कल्चर को भी उन्होंने अपने इस उपन्यास के माध्यम से दर्शाया है। चूँकि हमारा पारंपरिक समाज इन संबंधों को सहर्ष मुखर होकर स्वीकार नहीं कर पाता। इसलिए सोमा और गौतम पति–पत्नी का आवरण ओढ़े समाज के सामने खड़े दिखते हैं। परस्पर प्रेम का अभाव इन की दिशा बदल देता है। सोमा के जीवन में सुजीत के आते ही संबंधों की परिणति कुछ और ही हो जाती है। प्रेम की तलाश सोमा को उस जकड़न भरी समाज में अस्वीकार की स्थिति में लाकर खड़ा कर देता है तो वहीँ दूसरी ओर गौतम पुजारी भैया के अपने संबंधों को सटीक ठहराता है। समलैंगिकता कोई अपराध तो नहीं है। परंतु दोहरा जीवन जीना एवं सामने वाले को धोखे में रखना यह न्याय नहीं है।

गौतम और सोमा का यह आपसी संवाद इस बात की पुष्टि करता है कि गौतम एक समलिंगी है लेकिन वह इस बात को सबके सामने स्वीकार नहीं करना चाहता है, लेकिन सोमा बहुत ईमानदार है, वह अपने और प्रोफ़ेसर सुजीत के संबंध को सबके सामने स्वीकार करती है। वह सुजीत से सच्चा प्रेम करती है।

"सुजीत मैं तुमसे प्यार करती हूं। मैं जानती हूं तुम विवाहित हो, मैं भी तो विवाहिता हूं और हमारा यह अवैध संबंध, दुनिया क्या कहेगी? समाज क्या कहेगा? तुम्हारी पत्नी मुझे धोखेबाज कहेगी? यही न लेकिन मैं क्या करूं सुजीत? सब कुछ समझते हुए भी मैं अपने को रोक नहीं पा रही। इसलिए यह सब कह रही हूं। तुम्हीं ने कभी कहा था–

"विवाह एक संस्था है, रजिस्ट्री के कागजों पर सही किया हुआ नाम है। तलाक की व्यवस्था कानून ने बनाई है। कानून मनुष्य के स्वभाव को समझकर ही बनाया जाता है। यदि दो व्यक्ति एक साथ नहीं रह सकते, यदि कहीं कोई गहरी कमी हो, तब इस बंधन को तोड़ा भी जा सकता है बल्कि तोड़ ही देना चाहिए।"[12]

सोमा सुजीत से प्रेम करती है, वह प्रेम समाज की नजरों में सही नहीं हो सकता है क्योंकि वे दोनों शादीशुदा हैं। किंतु सोमा अपने और सुजीत के रिश्ते को अवैध नहीं मानती और न ही वो गौतम की तरह बुजदिल है जो अपने संबंधों को दूसरों की नजरों से बचाता फिरता है।

जब सोमा उसका सच उसके सामने रखती है, तब भी वह मुस्कुराता है–

"गौतम मैं पूछना चाहती हूं– क्या मैं शुरू से ऐसी ही थी? क्या मेरा तुमसे कभी कोई लगाव नहीं था? क्या मैंने अपनी पत्नी की भूमिका में कभी कोई कोताही की? लेकिन पुजारी भैया के साथ तुम्हारा आचरण, फिर इन दिनों नए वाले ड्राइवर के साथ और भैया लोगों का सब कुछ देखकर भी अनदेखा करना, ताकि व्यापार में, घर की हिस्सेदारी में तुम हमेशा कमजोर रहो, कुछ न मांग सको।[13]

गौतम को यह मंजूर था कि वह जैसी जिंदगी जी रहा है उसे वो जिंदगी जीने दी जाए। सोमा उसके साथ समझौता करके उसी तरह बनी रहे, लेकिन सोमा ने विरोध किया और अपने लिए नए संबंध बनाए।

सुजीत की पत्नी जिस प्रकार से सोमा को अपनाती है और घर छोड़कर चली जाती है यह इस उपन्यास में बड़ा असंगत प्रतीत होता है कि कैसे कोई पत्नी अपने पति से बिना किसी सवाल–जवाब के अपनी बच्ची को लेकर घर छोड़कर चली जाती है। ऐसे संबंध एक तरफ तो किसी का परिवार बसाते हैं दूसरी तरफ किसी का घर उजाड़ते हैं। हमारे समाज में ऐसे अनेकों संबंध देखने को मिलते हैं। कहीं स्त्रियां घर छोड़कर चली जाती हैं तो कहीं रोती–सिसकती पड़ी रहती हैं। इसमें किसे दोष दिया जाए। चाहे इस जमाने की बात हो या पहले जमाने की, यह तो अनवरत चलती आ रही है, इसके लिए कोई मापदंड नहीं है कि यह सही है या गलत। समाज इसे गलत कहता है लेकिन जो लोग प्रेम में होते हैं उन्हें यह सही लगता है और यदि देखा जाए तो स्त्री–पुरुष संबंधों का कोई समीकरण नहीं होता है। इस उपन्यास में पीढ़ी का अंतराल दिखाई देता है। ताई जी और सुराणा जी एक दूसरे से प्रेम करते थे परंतु समाज के भय से चुप रहे। सुराणा जी सेठ जी के स्टेट के मैनेजर थे एवं सेठ जी के देहांत के बाद वे ही सारा काम संभालते थे। पद्मावती (ताई जी) के मन में भी सुराणा जी के लिए भावनाएं थीं वे दोनों इस भावना को सबके सामने उद्घाटित भी नहीं कर पाते थे, उनके मन में इस भावना के लिए कोई अपराध बोध नहीं था। पद्मावती को समाज की चिंता थी क्योंकि वह विधवा है, सुराणा जी से कहती है–

"लेकिन मैं विधवा हूं ना!"

"क्या तुम पहली विधवा हो, जिसने किसी से प्यार किया है?"

मगर समाज की दृष्टि? सुराणा जी समाज तो गंगाजल को भी नाले का पानी कहे बिना नहीं रहता।"

"पानी तो पानी है, पद्मावती... वह नाले में बहे गया गंगा में।"

"नहीं...नहीं... सुराणा जी, नाले में बहता हुआ पानी पवित्र नहीं।"

"पवित्रता अपवित्रता सब कुछ हमारे द्वारा आरोपित हैं... अपने आप में तथ्य, तथ्य है... जैसे तुम्हारा मेरा प्यार एक तथ्य है... गलत और सही की उपाधि तो बाद में हमने इस पर चिपका दिया है।"[14]

'अग्नि संभवा' उपन्यास में और आइवी और शिव के प्रेम–संबंध भी कुछ ऐसे हैं या कहें कि कुछ अजीब हैं। आइवी उसके बेटों को अपने बेटे की तरह पालती है, उन्हें उनकी माँ का प्यार देती है। और शायद मन ही मन वह शिव का भी प्यार चाहती है लेकिन अल्फर्ड शिव हर रोज लड़कियां बदलता है और ये बात आइवी को पसंद नहीं। आइवी अपनी ईमानदारी और ईर्ष्या का परिचय उसकी चोरी पकड़ कर देती है। मिस्टर द्रिके के ऑफिस के घोटाले का पर्दाफाश कर देती है। आइवी प्रभा आईबी से कहती है

"आइवी तुम्हें लगाव की जरूरत है और तुम हो कि जानबूझकर संबंधों की जड़ पर कुल्हाड़ी मारती हो। मास्टर शिव की शिकायत करने तुम्हें यहां आने की क्या जरूरत पड़ी? देखो आईवी व्यापार की दुनिया में तुम्हें अल्फर्ड के व्यक्तिगत जीवन से कोई मतलब नहीं होना चाहिए था। वह लड़की को लेकर ऑफिस में तो नहीं आता था। ना?"[15]

आइवी और शिव के रिश्ते में एकतरफा प्रेम, स्वार्थ एवं ईर्ष्या थी। आइवी उसके बेटों से अपने बेटे की कमी पूरी करती थी, लेकिन उसका प्रेम न मिल पाने के कारण उसकी ईर्ष्या इस हद तक पहुंच गई कि उसने उसकी शिकायत मिस्टर द्रिके एवं मिसेज द्रिके से कर दी। संबंध बहुत हद तक मानवीय स्तर पर निर्भर करता है। आइवी और शिव का संबंध इस बात का उदाहरण है। स्वार्थ के वशीभूत रिश्ते कई बार विकृत हो जाते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि व्यवसायीकरण की इस प्रक्रिया में मनुष्य केवल एक यंत्र बनकर रह गया है, जिसे प्रेम और अपनेपन की आवश्यकता है। हमारा समाज अवसाद, तनाव और अलगाव में जीता हुआ समाज है। जो जीवन में संबंधों की गरमाहट को महसूसना चाहता है जो उससे कहीं छूट गई है। निर्मल वर्मा की कहानी ''परिंदे' के लतिका के इस वाक्य के साथ ही 'हम कहाँ जा रहे हैं' जहाँ कोई दिशा नहीं हैं एक अंधी दौड़ है मुनाफा कमाने की, यह शब्द लाभ, मुनाफा, फायदा, संबंधों में इन शब्दों का दूर–दूर तक कहीं कोई वास्ता नहीं है। गणित की भांति स्त्री–पुरुष संबंधों का कहीं कोई समीकरण नहीं होता। संबंधों के नाम 'आषाढ़ का एक दिन' की मल्लिका भावनाओं के आधार पर संबंधों पर जिए जा सकते हैं प्रभा खेतान ने वर्तमान समाज में बदलते संबंधों की पड़ताल बड़ी सूक्ष्मता से किया है।

सन्दर्भ सूचि

1. प्रभा खेतान, आओ पेपे घर चलें, पृ. 68
2. वही, पृ. 75
3. वही, पृ. 95
4. वही, पृ. 117
5. वही, पृ. 133
6. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पृ. 47
7. छिन्नमस्ता, पृ. 141
8. छिन्नमस्ता, पृ. 144
9. छिन्नमस्ता, पृ. 183
10. प्रभा खेतान, पीली आंधी, पृ. 232
11. वही, पृ. 248
12. वही, पृ. 244–245
13. वही, पृ. 252
14. वही, पृ. 282
15. प्रभा खेतान, अग्निसंभवा, हंस, मई 1992, पृ. 66